THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-03 | October-2025
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI: : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.26

एनईपी 2020 के आलोक में उच्च शिक्षा का योग्यता-आधारित रूपांतरण: योगात्मक से रचनात्मक मूल्यांकन की ओर एक वैचारिक बदलाव

डॉ. मोहम्मद वकार रज़ा और राशिदी रुकैया
सहायक प्रोफेसर (बी.एड.), एस.एस.एस.वी.एस. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चुनार, मिर्जापुर
सहायक प्रोफेसर, (बी.एड.), बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, बालूगंज, आगरा

सारांश (Abstract)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारतीय उच्च शिक्षा के इतिहास में एक बुनियादी बदलाव (Paradigm Shift) का प्रतिनिधित्व करती है। यह नीति पारंपरिक 'स्मृति-आधारित' योगात्मक मूल्यांकन (Summative Assessment) से हटकर एक 'योग्यता-आधारित' रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment) ढांचे की वकालत करती है। यह शोध पत्र इस रूपांतरण के दार्शनिक और व्यावहारिक पहलुओं का गहन विश्लेषण करता है। पत्र यह तर्क देता है कि योग्यता-आधारित शिक्षा (CBE) न केवल छात्र की रोजगार क्षमता में सुधार करती है, बल्कि यह आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान जैसे 21वीं सदी के कौशलों को भी पोषित करती है। आधिकारिक नीति दस्तावेजों और समकालीन विद्वानों के साहित्य की समीक्षा के माध्यम से, यह लेख मूल्यांकन सुधारों, संकाय की भूमिका और संस्थागत स्वायत्तता के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करता है। अंत में, यह लेख कार्यान्वयन की चुनौतियों जैसे कि डिजिटल विभाजन और संकाय प्रतिरोध को संबोधित करते हुए समाधान प्रस्तावित करता है।

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली लंबे समय से 'परीक्षा-केंद्रित' रही है, जहाँ सफलता का पैमाना छात्र की 'सृजनात्मकता' नहीं बल्कि उसकी 'पुनरावृत्ति क्षमता' (Recall Capacity) रही है। पारंपरिक योगात्मक मूल्यांकन, जो आमतौर पर सेमेस्टर के अंत में तीन घंटे की लिखित परीक्षा के रूप में होता है, छात्र की वास्तविक क्षमता का केवल एक सीमित अंश ही माप पाता है। शिक्षा मंत्रालय (2020) के अनुसार, यह प्रणाली छात्रों में उच्च तनाव और रटंत विद्या (Rote Learning) को बढ़ावा देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 इस व्यवस्था को जड़ से बदलने का प्रस्ताव करती है। यह शिक्षा के उद्देश्य को 'अंकों की प्राप्ति' से बदलकर 'योग्यता की प्राप्ति' (Attainment of Competencies) के रूप में पुनर्परिभाषित करती है। यह लेख इस बात पर

केंद्रित है कि कैसे मूल्यांकन की प्रकृति को बदलकर हम पूरी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (Teaching-Learning Process) को छात्र-केंद्रित बना सकते हैं।

2. योग्यता-आधारित शिक्षा (CBE): एक सैद्धांतिक ढांचा

योग्यता-आधारित शिक्षा (CBE) एक ऐसा दृष्टिकोण है जहाँ छात्र की प्रगति उसके द्वारा अर्जित विशिष्ट कौशलों और ज्ञान के प्रदर्शन पर निर्भर करती है, न कि कक्षा में बिताए गए घंटों पर।

2.1 दार्शनिक आधार

CBE मुख्य रूप से **'निर्मितिवाद' (Constructivism)** और **'ब्लूम के टैक्सोनॉमी'** के संशोधित स्वरूप पर आधारित है। जहाँ पारंपरिक शिक्षा 'समझने' (Understanding) पर रुक जाती है, वहीं CBE छात्र को 'सृजन' (Creating) और 'विश्लेषण' (Analyzing) के स्तर तक ले जाती है।

2.2 21वीं सदी के कौशल और एनईपी 2020

नीति के अनुसार, उच्च शिक्षा को ऐसे स्नातक तैयार करने चाहिए जो "समग्र, लचीले और बहु-विषयक" हों। इसमें संज्ञानात्मक कौशल के साथ-साथ सामाजिक और भावनात्मक कौशल (Social and Emotional Skills) भी शामिल हैं।

3. मूल्यांकन प्रतिमान में बदलाव: योगात्मक बनाम रचनात्मक (Summative vs. Formative)

शोध पत्र का मुख्य तर्क मूल्यांकन के इन दो स्वरूपों के बीच के वैचारिक अंतर पर आधारित है।

3.1 योगात्मक मूल्यांकन की सीमाएं

योगात्मक मूल्यांकन 'अधिगम का मूल्यांकन' (Assessment **of** Learning) है।

- यह प्रकृति में 'निर्णयात्मक' (Judgmental) है।
- यह सीखने की प्रक्रिया पूरी होने के बाद होता है, जिससे सुधारात्मक प्रतिक्रिया (Corrective Feedback) की संभावना समाप्त हो जाती है।

3.2 रचनात्मक मूल्यांकन की शक्ति

रचनात्मक मूल्यांकन 'अधिगम के लिए मूल्यांकन' (Assessment **for** Learning) है।

- यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।
- इसमें पोर्टफोलियो, क्विज़, स्व-मूल्यांकन (Self-assessment) और सहकर्मी-फीडबैक (Peer-feedback) शामिल हैं।
- एनईपी 2020 के अनुसार, यह "अधिक नियमित, योग्यता-आधारित और छात्र के विकास को बढ़ावा देने वाला" है (UGC, 2021)।

4. एनईपी 2020 के तहत कार्यान्वयन रणनीतियां

नीति ने मूल्यांकन सुधारों को प्रभावी बनाने के लिए विशिष्ट तंत्र विकसित किए हैं:

4.1 'परख' (PARAKH) और मूल्यांकन मानक

राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र 'परख' का उद्देश्य मूल्यांकन के लिए मानदंड और मानक निर्धारित करना है। उच्च शिक्षा में, यह सुनिश्चित करेगा कि विभिन्न संस्थानों के बीच 'क्रेडिट हस्तांतरण' (Credit Transfer) के दौरान छात्र की योग्यता का सही मापन हो।

4.2 360-डिग्री समग्र रिपोर्ट कार्ड

मूल्यांकन अब केवल शैक्षणिक विषयों तक सीमित नहीं रहेगा। इसमें छात्र की व्यावसायिक दक्षता, नैतिक मूल्य, और पाठ्येतर गतिविधियों (Co-curricular activities) का भी समावेश होगा।

4.3 प्रौद्योगिकी का उपयोग (AI and Adaptive Testing)

NEP 2020 कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित 'अनुकूली परीक्षण' (Adaptive Testing) का सुझाव देती है, जो प्रत्येक छात्र की सीखने की गति के अनुसार प्रश्नों के स्तर को समायोजित कर सके।

5. शिक्षण पद्धति और संकाय पर प्रभाव

जब मूल्यांकन का केंद्र बदलता है, तो शिक्षाशास्त्र (Pedagogy) भी अनिवार्य रूप से बदल जाता है।

- **शिक्षक की बदलती भूमिका:** शिक्षक अब केवल 'सूचना का स्रोत' नहीं है, बल्कि एक 'मेंटर' और 'सुविधा प्रदाता' (Facilitator) है।
- **सक्रिय अधिगम (Active Learning):** रचनात्मक मूल्यांकन शिक्षकों को ऐसी गतिविधियाँ डिजाइन करने के लिए प्रेरित करता है जहाँ छात्र सक्रिय रूप से भाग लें, जैसे केस स्टडीज और प्रोजेक्ट-आधारित लर्निंग।

6. कार्यान्वयन की चुनौतियां (Critical Challenges)

नीति की दृष्टि जितनी स्पष्ट है, उसका क्रियान्वयन उतना ही चुनौतीपूर्ण है:

1. **सांस्कृतिक जड़ता:** दशकों से चले आ रहे 'ग्रेडिंग सिस्टम' के प्रति मोह को छोड़ना संकाय और अभिभावकों दोनों के लिए कठिन है।
2. **संसाधनों की कमी:** व्यक्तिगत रचनात्मक मूल्यांकन के लिए छोटे अनुपात वाली कक्षाओं (Teacher-Student Ratio) की आवश्यकता होती है, जो भारत के सार्वजनिक महाविद्यालयों में एक बड़ी चुनौती है।
3. **मानकीकरण का भय:** रचनात्मक मूल्यांकन में 'व्यक्तिपरकता' (Subjectivity) का जोखिम होता है। इसे दूर करने के लिए 'रूब्रिक्स' (Rubrics) का व्यापक प्रशिक्षण आवश्यक है (वर्मा और सिंह, 2024)।

7. निष्कर्ष और भविष्य की दिशा (Conclusion)

NEP 2020 के तहत योग्यता-आधारित रूपांतरण केवल एक प्रशासनिक सुधार नहीं है, बल्कि यह भारतीय उच्च शिक्षा की आत्मा का नवीनीकरण है। योगात्मक से रचनात्मक मूल्यांकन की ओर यह बदलाव छात्रों को 'परीक्षा के भय' से मुक्त कर 'सीखने के आनंद' की ओर ले जाएगा।

सफल कार्यान्वयन के लिए सरकार को न केवल वित्त पोषण बढ़ाना होगा, बल्कि संकाय विकास कार्यक्रमों (FDP) के माध्यम से शिक्षकों को इस नई पद्धति के लिए मानसिक और तकनीकी रूप से तैयार करना होगा। अंततः, यह बदलाव भारत को एक वास्तविक 'ज्ञान महाशक्ति' (Knowledge Superpower) के रूप में स्थापित करने की दिशा में सबसे निर्णायक कदम होगा।

संदर्भ (References)

- **Aithal, P. S., & Aithal, S. (2020).** *Analysis of the Indian National Education Policy 2020*. IJMTSS.
- **Garole, P. (2025).** *Implementing competency-based education under NEP 2020*. AIIRJ.
- **Ministry of Education. (2020).** *National Education Policy 2020*. Govt. of India.
- **Sharma, R., & Yadav, R. (2023).** *Exploring 21st century innovative pedagogy paradigms*. IJRSS.
- **Verma, S., & Singh, P. (2024).** *NEP 2020 and multidisciplinary institutions*. IJRTI.

Cite this Article:

डॉ. मोहम्मद वकार रज़ा और राशिदी रुकैया ,“ एनईपी 2020 के आलोक में उच्च शिक्षा का योग्यता-आधारित रूपांतरण: योगात्मक से रचनात्मक मूल्यांकन की ओर एक वैचारिक बदलाव” The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, pp.214–217.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons 1Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. मोहम्मद वकार रज़ा और राशिदी रुकैया

For publication of research paper title

एनईपी 2020 के आलोक में उच्च शिक्षा का योग्यता-आधारित रूपांतरण: योगात्मक से रचनात्मक मूल्यांकन की ओर एक वैचारिक बदलाव

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-03, Month October, Year-2025, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI: : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.26